صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۟ۙ الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۟ۙ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۟ ع

भूले बैठे हैं[5] वोह जो दिखावा करते हैं[6] और बरत्ने की चीज़[7] मांगे नहीं देते[8]

اٰیاتها ۳ ۱۰۸ سُوْرَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ ۱۵ رکوعها ۱

सूरए कौसर मक्किय्या है, इस में तीन आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۟ؕ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۟ؕ اِنَّ شَانِئَكَ

ऐ मह़बूब बेशक हम ने तुम्हें बे शुमार ख़ूबियां अ़त़ा फ़रमाईं[2] तो तुम अपने रब के लिये नमाज़ पढ़ो[3] और क़ुरबानी करो[4] बेशक जो तुम्हारा दुश्मन है

هُوَ الْاَبْتَرُ ۟ ع

वोही हर ख़ैर से मह़रूम है[5]

اٰیاتها ۶ ۱۰۹ سُوْرَةُ الْكٰفِرُوْنَ مَكِّيَّةٌ ۱۸ رکوعها ۱

सूरए काफ़िरून मक्किय्या है, इस में छ[6] आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

---

5 : मुराद इस से मुनाफ़िक़ीन हैं जो तन्हाई में नमाज़ नहीं पढ़ते क्यूं कि इस के मो'तक़िद नहीं और लोगों के सामने नमाज़ी बनते हैं और अपने आप को नमाज़ी ज़ाहिर करते हैं और दिखाने के लिये उठ बैठ लेते हैं और ह़क़ीक़त में नमाज़ से ग़ाफ़िल हैं। **6 :** इबादतों में। आगे उन के बुख़्ल का बयान फ़रमाया जाता है **7 :** मिस्ल सूई व हांडी व पियाले के **8 मस्अला :** उ़लमा ने फ़रमाया कि मुस्तह़ब है कि आदमी अपने घर में ऐसी चीज़ें अपनी ह़ाजत से ज़ियादा रखे जिन की हमसायों को ह़ाजत होती है और उन्हें आ़रिय्यतन दिया करे। **1 :** "सूरतुल कौसर" जुम्हूर के नज़्दीक मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, तीन आयतें, दस कलिमे, बियालीस ह़र्फ़ हैं। **2 :** और फ़ज़ाइले कसीरा इनायत कर के तमाम ख़ल्क़ पर अफ़्ज़ल किया। ह़ुस्ने ज़ाहिर भी दिया ह़ुस्ने बात़िन भी, नसबे आ़ली भी, नुबुव्वत भी, किताब भी, ह़िक्मत भी, इ़ल्म भी, शफ़ाअ़त भी, ह़ौज़े कौसर भी, मक़ामे मह़मूद भी, कस्रते उम्मत भी, आ'दाए दीन पर ग़लबा भी, कस्रते फ़ुतूह़ भी और बे शुमार ने'मतें और फ़ज़ीलतें जिन की निहायत नहीं। **3 :** जिस ने तुम्हें इ़ज़्ज़तो शराफ़त दी **4 :** उस के लिये उस के नाम पर, ब ख़िलाफ़ बुत परस्तों के जो बुतों के नाम पर ज़ब्ह़ करते हैं। इस आयत की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है कि नमाज़ से नमाज़े ई़द मुराद है। **5 :** न आप। क्यूं कि आप का सिल्सिला क़ियामत तक जारी रहेगा, आप की औलाद में भी कसरत होगी और आप के मुत्तबिई़न से दुन्या भर जाएगी, आप का ज़िक्र मिम्बरों पर बुलन्द होगा, क़ियामत तक पैदा होने वाले आ़लिम और वाइ़ज़ **अल्लाह** तआ़ला के ज़िक्र के साथ आप का ज़िक्र करते रहेंगे, बे नामो निशान और हर भलाई से मह़रूम तो आप के दुश्मन हैं। **शाने नुज़ूल :** जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के फ़रज़न्द ह़ज़रते क़ासिम का विसाल हुवा तो कुफ़्फ़ार ने आप को "अब्तर" या'नी मुन्क़त़उ़न्नस्ल कहा और येह कहा कि अब इन की नस्ल नहीं रही, इन के बा'द अब इन का ज़िक्र भी न रहेगा, येह सब चरचा ख़त्म हो जाएगा, इस पर सूरए करीमा नाज़िल हुई और **अल्लाह** तआ़ला ने उन कुफ़्फ़ार की तक्ज़ीब की और उन का बालिग़ रद फ़रमाया। **1 :** "सूरतुल काफ़िरून" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, छ[6] आयतें, छब्बीस कलिमे, चोरानवे ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** क़ुरैश की एक जमाअ़त ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा कि आप हमारे दीन का इत्तिबाअ़ कीजिये हम आप के दीन की इत्तिबाअ़ करेंगे, एक साल आप हमारे मा'बूदों की इबादत करें एक साल हम आप के मा'बूद की इबादत करेंगे, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

www.dawateislami.net

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ﴿۱﴾ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ﴿۲﴾ وَ لَاۤ اَنْتُمْ

तुम फ़रमाओ ऐ काफ़िरो[2] न मैं पूजता हूं जो तुम पूजते हो और न तुम

عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۚ﴿۳﴾ وَ لَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ﴿۴﴾ وَ لَاۤ اَنْتُمْ

पूजते हो जो मैं पूजता हूं और न मैं पूजूंगा जो तुम ने पूजा और न तुम

عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ؕ﴿۵﴾ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَ لِيَ دِيْنِ ﴿۶﴾ ع

पूजोगे जो मैं पूजता हूं तुम्हें तुम्हारा दीन और मुझे मेरा दीन[3]

اٰياتها ٣ ﴿١١٠ سُوْرَةُ النَّصْرِ مَدَنِيَّةٌ ١١٤﴾ ركوعها ١

सूरए नस्र मदनिय्या है, इस में तीन आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَ الْفَتْحُ ۙ﴿۱﴾ وَ رَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ

जब **अल्लाह** की मदद और फ़त्ह़ आए[2] और लोगों को तुम देखो कि **अल्लाह** के दीन में फ़ौज फ़ौज

اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۙ﴿۲﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَ اسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ﴿۳﴾ ع

दाख़िल होते हैं[3] तो अपने रब की सना करते हुए उस की पाकी बोलो और उस से बख़्शिश चाहो[4] बेशक वोह बहुत तौबा क़बूल करने वाला है[5]

अल्लाह की पनाह कि मैं उस के साथ ग़ैर को शरीक करूं, कहने लगे तो आप हमारे किसी मा'बूद को हाथ ही लगा दीजिये हम आप की तस्दीक़ कर देंगे और आप के मा'बूद की इबादत करेंगे, इस पर येह सूरए शरीफ़ा नाज़िल हुई और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मस्जिदे ह़राम में तशरीफ़ ले गए, वहां क़ुरैश की वोह जमाअ़त मौजूद थी, ह़ुज़ूर ने येह सूरत उन्हें पढ़ कर सुनाई तो वोह मायूस हो गए और ह़ुज़ूर के और ह़ुज़ूर के अस्ह़ाब के दरपै ईज़ा हुए। **2 :** मुख़ात़ब यहां मख़्सूस काफ़िर हैं जो इल्मे इलाही में ईमान से मह़रूम हैं। **3 :** या'नी तुम्हारे लिये तुम्हारा कुफ़्र और मेरे लिये मेरी तौह़ीद और मेरा इख़्लास और मक़्सूद इस से तहदीद है। "وَهٰذِهِ الْاٰيَةُ مَنْسُوْخَةٌ بِاٰيَةِ الْقِتَالِ" (या'नी और येह आयत क़िताल की आयत से मन्सूख़ है) **1 :** "सूरए नस्र" मदनिय्या है इस में एक रुकूअ़, तीन आयतें, सतरह कलिमे, सतत्तर ह़र्फ़ हैं। **2 :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये दुश्मनों के मुक़ाबले में। इस से या आ़म फ़ुतूह़ाते इस्लाम मुराद हैं या ख़ास फ़त्ह़े मक्का। **3 :** जैसा कि बा'दे फ़त्ह़े मक्का हुवा कि लोग अक़्तारे अर्ज़ से शौक़े ग़ुलामी में चले आते थे और शरफ़े इस्लाम से मुशर्रफ़ होते थे। **4 :** उम्मत के लिये **5 :** इस सूरत के नाज़िल होने के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ" की बहुत कसरत फ़रमाई। ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि येह सूरत ह़ज्जतुल वदाअ़ में ब मक़ामे मिना नाज़िल हुई, इस के बा'द आयत "اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ" नाज़िल हुई, इस के नाज़िल होने के बा'द अस्सी रोज़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने दुन्या में तशरीफ़ रखी, फिर आयत "الكلالة" नाज़िल हुई, इस के बा'द ह़ुज़ूर पचास रोज़ तशरीफ़ फ़रमा रहे, फिर आयत "وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ" नाज़िल हुई, इस के बा'द ह़ुज़ूर इक्कीस रोज़ या सात रोज़ तशरीफ़ फ़रमा रहे। इस सूरत के नाज़िल होने के बा'द सह़ाबा ने समझ लिया था कि दीन कामिल और तमाम हो गया तो अब ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم दुन्या में ज़ियादा तशरीफ़ न रखेंगे, चुनान्चे ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ येह सूरत सुन कर इसी ख़याल से रोए, इस सूरत के नाज़िल होने के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ख़ुत्बे में फ़रमाया कि एक बन्दे को **अल्लाह** तआ़ला ने इख़्तियार दिया,

www.dawateislami.net